कारणनिरूपण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत्कारणम्। यथा तन्तुवेमादिकं पटस्य कारणम्।

जिसकी सत्ता घटादि कार्योत्पत्ति से पूर्व निश्चित हो और जो अन्यथासिद्ध (अनावश्यक) न हो उसे 'कारण' कहते हैं।

जैसे 'तन्तु' और 'वेमा' (पट बुनने का साधनरूप दण्ड) आदि 'पट' के कारण हैं क्योंकि 'पटकार्य' के पूर्व 'तन्तु' और 'वेमा' आदि की सत्ता (उपस्थिति) नियत (निश्चितरूप से) रहती है, और वे अन्यथासिद्ध (अनावश्यक) भी नहीं है। इसीलिए 'तन्तु', 'वेमा' आदि पट के कारण कहे जाते है।

कारण के लक्षण में पूर्वभाव, नियत और अन्यथासिद्ध-ये शब्द विशेष महत्त्व के हैं। अतः इनका अर्थ और लक्षण में उनके सन्निवेश का प्रयोजन जानना आवश्यक है।

पूर्वभाव का अर्थ कार्योत्पत्ति के अव्यवहित पूर्वक्षण में रहना किया जाता है।

नियत का अर्थ है-अवश्यम्भावी-नियमपूर्वक होने वाला। यदि यह पद कारण के लक्षण मेंम न रखा जाए और केवल 'यस्य कार्यात् पूर्वभावः' इतना ही लक्षण रखा जाए तो कार्य की उत्पत्ति से पहले आकस्मिक रूप से आ जाने वाली सभी वस्तुएं उस कार्य का कारण कहलाने लगेगीं। उदाहरणार्थ यदि पट की उत्पत्ति से पूर्व संयोगवश गर्दभ आ जाए तो वह गर्दभ पट की उत्पत्ति से पूर्व विद्यमान है-कार्यात् पूर्वभावी है, अतः गर्दभ को पट का कारण मानना पड़ेगा। किन्तु उसे पट का कारण माना नहीं जा सकता है। अतः लक्षण को अतिव्याप्ति दोष से मुक्त रखने के लिए लक्षण में 'नियत' पद रखा गया है। लक्षण में नियत पद रखने पर जो वस्तु कार्य की उत्पत्ति से पूर्व नियमपूर्वक रहती है-अवश्य रहती है-अनिवार्य है, वह कारण कहलाती है। गर्दभ तो सभी पटों की उत्पत्ति से पूर्व नियमपूर्वक नहीं रहता। अतः केवल संयोगवश कार्य से पूर्वभावी वस्तुओं को उस कार्य का कारण नहीं माना जाता।

नियतपूर्वभावी वस्तु को ही कारण कहा जा सकता है। इसीलिए कारण के लक्षण में 'नियत पद' रखा गया है।

अनन्यथासिद्ध का अर्थ है-जो अन्यथासिद्ध न हो। अन्यथासिद्ध का अर्थ है-अन्य प्रकार से उपयुक्त। जो नियतपूर्वी तो हो किन्तु उसकी पूर्ववर्तिता दूसरे पदार्थ की कारणता अन्य कार्य के जनक के रूप में उपयुक्त=चरितार्थ=परिसमाप्त न हुई हो वह अनन्यथासिद्ध कहलायेगा। भाव यह है कि किसी कारण में कार्य के उत्पादन की कोई शक्ति होती है, वह शक्ति जब किसी एक कार्य के प्रति उपयुक्त हो चुकती है तो वह कारण अन्य कार्य के प्रति अन्यथासिद्ध कहलाता है। अतः जो अन्यथासिद्ध नहीं होता (अर्थात् अनन्यथासिद्ध होता है) वही कारण कहलाता है। यदि इस पद को कारण में न रखा जाए तो कारण का लक्षण होगा-'यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतः'। तब इस लक्षण की 'तन्तुरूप' आदि में अतिव्याप्ति होने लगेगी। यह सर्वसम्मत है कि तन्तु पट का कारण है। वह पट का नियतपूर्वभावी है। तन्तु में तन्तुरूप भी रहता है। वह भी नियतरूप से पट की उत्पत्ति से पूर्व विद्यमान रहता है-पट से नियतपूर्वभावी है। अतः 'यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतः'- इसके अनुसार तन्तुरूप को भी पट का कारण मानना पड़ेगा। किन्तु सिद्धान्त में तन्तुरूप को पटरूप का कारण माना जाता है, उसे पट का कारण नहीं माना जाता है। इस प्रकार लक्षण में अतिव्याप्ति दोष होने लगेगा। उसके निराकरण के लिए कारण के लक्षण में 'अनन्यथासिद्ध' यह पद रखा गया है।

यह प्रश्न उपस्थापित किया जा सकता है कि तन्तुरूप को पट तथा पटरूप दोनों का कारण क्यों न मान लिया जाए। इसके उत्तर में कहा गया है-'पटं प्रत्यपि कारणत्वे कल्पनागौरवप्रसङ्गात्'। भाव यह है कि तन्तु आदि को पट का कारण मान लेने पर ही पट कार्य की उत्पत्ति बन जाती है। फिर तन्तुरूप को भी पट का कारण मानना कल्पना गौरव ही है अर्थात् ऐसा मानने का कोई उपयोग नहीं। कल्पनागौरव को दोष माना जाता है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि जहाँ अल्प कल्पना ही किसी तथ्य की व्याख्या करने में समर्थ है, वहाँ उससे अधिक कल्पना करना कल्पना गौरव कहलाता है।